अस्मिन् प्रश्नपत्रे 35 प्रश्नाः एवं 8 मुद्रित पृष्ठाः सन्ति।
इस प्रश्न-पत्र में 35 प्रश्न तथा 8 मुद्रित पृष्ठ हैं।

अनुक्रमाङ्कः
रोल नं०

गूढसंख्या **65/S/A**
कोड नं०
स्तवकः/सेट **A**

वेदाध्ययनम्
वेद अध्ययन
(245)

परीक्षादिवसः दिनाङ्कश्च .....
(परीक्षा का दिन व दिनांक)

निरीक्षकयोः हस्ताक्षरम् 1. .....
(निरीक्षकों के हस्ताक्षर)

2. .....

सामान्या निर्देशाः —

1. अनुक्रमाङ्कः प्रश्नपत्रस्य प्रथमपृष्ठे नूनं लेख्यः।
2. निरीक्ष्यतां यत् प्रश्नपत्रस्य पृष्ठसंख्या प्रश्नानां संख्या च प्रथमपृष्ठस्य प्रारम्भे प्रदत्तसंख्या समाना न वा। प्रश्नक्रमः सम्यग् न वा।
3. वस्तुनिष्ठप्रश्नानाम् (क), (ख), (ग), (घ) एषु विकल्पेषु युक्तम् उत्तरं चित्वा उत्तरपत्रे लेख्यम्।
4. समेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि निर्धारितसमये एव लेख्यानि।
5. उत्तरपत्रे आत्मपरिचयात्मकं लेखनम् अथवा निर्दिष्टस्थानं विहाय अन्यत्र क्वापि अनुक्रमाङ्कलेखनं सर्वथा वर्जितमस्ति।
6. स्वस्य उत्तरपत्रे प्रश्नपत्रस्य गूढसंख्या 65/S/A, स्तवक [A] नूनं लेख्या।
7. समेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया एव लेख्यानि।

सामान्य निर्देश :

1. प्रश्न-पत्र के पहले पृष्ठ पर अपना अनुक्रमांक अवश्य लिखें।

2. प्रश्न-पत्र को जाँच लें कि प्रश्न-पत्र के कुल पृष्ठों तथा प्रश्नों की उतनी ही संख्या है जितनी प्रथम पृष्ठ के प्रारम्भ में छपी है और प्रश्न क्रमिक रूप में हैं।

3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में चार विकल्पों (क), (ख), (ग) तथा (घ) में से सही उत्तर चुनकर उत्तर-पत्र में लिखना है।

4. सभी प्रश्नों के उत्तर निर्धारित समय में ही लिखना है।

5. उत्तर-पत्र में पहचान-चिह्न बनाने अथवा निर्दिष्ट स्थानों के अतिरिक्त कहीं भी लिखना सर्वथा वर्जित है।

6. अपने उत्तर-पत्र में प्रश्न-पत्र का कोड नं० 65/S/A, सेट [A] अवश्य लिखें।

7. सभी प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में ही लिखें।

वेदाध्ययनम्
वेद अध्ययन
(245)

परीक्षासमयावधिः — होरात्रयम्] [पूर्णाङ्काः — 100
परीक्षा का समय : तीन घंटे पूर्णाङ्क : 100

निर्देशाः — (i) अस्मिन् प्रश्नपत्रे [A] भागे 10, [B] भागे 10, [C] भागे 10, [D] भागे 5 इति आहत्य 35 प्रश्नाः सन्ति।
इस प्रश्न-पत्र में [A] भाग में 10, [B] भाग में 10, [C] भाग में 10, [D] भाग में 5—कुल मिलाकर 35 प्रश्न हैं।

(ii) प्रश्नस्य दक्षिणे पार्श्वे संख्यासु (अङ्काः × प्रश्नाः = पूर्णाङ्काः) इति एवम् अङ्कान् निर्दिशति।
प्रश्न के दाहिने तरफ संख्या (अङ्क × प्रश्न = पूर्णाङ्क) का निर्देश है।

(iii) **सर्वे** प्रश्नाः अनिवार्याः।
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

[A] दशानां युक्तं विकल्पं चिनुत— 1×10=10
दस के उचित विकल्प चुनिए :

1. मन्त्राणां समूहः

(क) संहिता (ख) ब्राह्मणम्
(ग) आरण्यकम् (घ) उपनिषत्

मंत्रों का समूह

(क) संहिता (ख) ब्राह्मण
(ग) आरण्यक (घ) उपनिषद्

2. ऋग्वेदस्य भाष्यं सर्वप्रथमं कः विरचितवान्?

(क) सायणाचार्यः (ख) स्कन्दस्वामी
(ग) रङ्गरामानुजः (घ) हलायुधः

'ऋग्वेद' का भाष्य सबसे पहले किसने लिखा?

(क) सायणाचार्य (ख) स्कन्दस्वामी
(ग) रङ्गरामानुज (घ) हलायुध

3. का पृथिवीस्थानीया देवता?

(क) वरुणः (ख) इन्द्रः

(ग) सूर्यः (घ) अग्निः

पृथ्वी का स्थानीय देवता कौन है?

(क) वरुण (ख) इन्द्र

(ग) सूर्य (घ) अग्नि

4. शुनःशेपोपाख्याने हरिश्चन्द्रः कम् उपास्य पुत्रं लब्धवान्?

(क) इन्द्रम् (ख) अग्निम्

(ग) वरुणम् (घ) अश्विनौ

'शुनःशेप' कहानी में हरिश्चन्द्र को किसकी उपासना से पुत्र प्राप्त हुआ?

(क) इन्द्र (ख) अग्नि

(ग) वरुण (घ) अश्विन

5. मिनीमसि द्यविद्यवि—इत्यत्र मिनीमसिपदस्य कः अर्थः?

(क) हिंसितवन्तः (ख) अवमानितवन्तः

(ग) मननं कृतवन्तः (घ) मनसा नीतवन्तः

मिनीमसि द्यविद्यवि—यहाँ 'मिनीमसि' पद का क्या अर्थ है?

(क) हिंसितवन्त (ख) अवमानितवन्त

(ग) मननं कृतवन्त (घ) मनसा नीतवन्त

6. रुरुचे रण्वसंदृक्—अत्र रण्वसंदृक् इति पदस्य कः अर्थः?

(क) रणसंद्रष्ट्री (ख) रणकुशला

(ग) रमणीयदर्शना (घ) रमणीदृक्

रुरुचे रण्वसंदृक्—यहाँ 'रण्वसंदृक्' पद का क्या अर्थ है?

(क) रणसंद्रष्ट्री (ख) रणकुशला

(ग) रमणीयदर्शना (घ) रमणीदृक्

7. राजर्षिः हरिश्चन्द्रः कस्मिन् वंशे समुत्पन्नः?

(क) चन्द्रवंशे (ख) इक्ष्वाकुवंशे

(ग) यादववंशे (घ) गौतमवंशे

राजर्षि हरिश्चन्द्र किस वंश में उत्पन्न हुए थे?

(क) चंद्र वंश में (ख) इक्ष्वाकु वंश में

(ग) यादव वंश में (घ) गौतम वंश में

8. विश्वामित्रेण पुत्ररूपेण गृहीतस्य शुनःशेपस्य किं नाम अभवत्?

(क) देवरातः (ख) आङ्गिरसः

(ग) विश्वश्रवाः (घ) सोयवसिः

शुनःशेप का क्या नाम था, जिसे विश्वामित्र ने अपने पुत्र के रूप में अपनाया था?

(क) देवरात (ख) आङ्गिरस

(ग) विश्वश्रवा (घ) सोयवसि

9. सूपसदनः—इत्यत्र कः प्रत्ययः?

(क) ल्युट् (ख) युच्

(ग) अनट् (घ) ल्यु

सूपसदनः—यहाँ कौन-सा प्रत्यय है?

(क) ल्युट् (ख) युच्

(ग) अनट् (घ) ल्यु

10. पूरुषः इति रूपसिद्धिः केन सूत्रेण भवति?

(क) छन्दसि बहुलम् (ख) अन्येभ्योऽपि दृश्यते

(ग) अन्येषामपि दृश्यते (घ) शेश्छन्दसि बहुलम्

'पूरुष' शब्द की सिद्धि किस सूत्र से होती है?

(क) छन्दसि बहुलम् (ख) अन्येभ्योऽपि दृश्यते

(ग) अन्येषामपि दृश्यते (घ) शेश्छन्दसि बहुलम्

[B] दशानां यथानिर्देशम् उत्तराणि लघूनि लिखत— 2×10=20

दस के यथानिर्दिष्ट लघु उत्तर लिखिए :

11. ऋग्वेदस्य अथर्ववेदस्य च ब्राह्मणानां नाम लिखत। 1+1=2

'ऋग्वेद' और 'अथर्ववेद' के ब्राह्मणों के नाम लिखिए।

12. को 'मन्त्रकण्टक' इत्युच्यते? 2

'मंत्र कंटक' किसे कहा जाता है?

13. इदानीं लभ्यमानः निरुक्तग्रन्थः केन विरचितः? निघण्टुशब्दस्य कः अर्थः? 1+1=2

इस समय उपलब्ध निरुक्तग्रन्थ की रचना किसके द्वारा हुई? 'निघण्टु' शब्द का क्या अर्थ है?

14. सर्वविधसोमयागस्य प्रकृतिः कः? का नाम प्रायणीयेष्टिः? 1+1=2

सभी प्रकार के सोमयाग की प्रकृति क्या है? प्रायणीयेष्टि का क्या नाम है?

15. सूर्यसूक्तस्य कः ऋषिः, किं छन्दः, का च देवता? 2

सूर्यसूक्त के ऋषि कौन हैं, कौन-सा छन्द है और कौन देवता है?

16. छन्दसि परेऽपि इति सूत्रस्यार्थं सोदाहरणं लिखत। 2

छन्दसि परेऽपि सूत्र का अर्थ उदाहरण सहित लिखिए।

17. पञ्चथम् इत्यत्र कः प्रत्ययः? किं चात्र प्रत्ययविधायकं सूत्रम्? 1+1=2

पञ्चथम्—यहाँ कौन-सा प्रत्यय है और प्रत्यय सूत्र क्या है?

18. मधुशब्दात् ञप्रत्यये सति किं रूपं भवति? किं च ञप्रत्ययविधायकं सूत्रम्? 1+1=2

'मधु' शब्द का 'ञ' प्रत्यय के साथ क्या रूप होगा? और 'ञ' प्रत्यय का सूत्र क्या है?

19. अमुप्रत्ययविधायकं सूत्रं किम्? सूत्रस्यास्य उदाहरणमेकं लिखत। 1+1=2

प्रत्यय 'अमु' का सूत्र क्या है? इस सूत्र का एक उदाहरण लिखिए।

20. शेश्छन्दसि बहुलम् इति सूत्रस्य उदाहरणं लिखत। सूत्रेणानेन किं विधीयते? 1+1=2

शेश्छन्दसि बहुलम् सूत्र का उदाहरण लिखिए। इस सूत्र द्वारा क्या प्रतिपादित होता है?

[C] दश अनतिदीर्घोत्तरैः समाधत्त— 4×10=40

दस के लघु उत्तर दीजिए :

21. किं तावत् वेदलक्षणम्? ऋग्यजुस्साम्नां लक्षणं लिखत।

वेद का लक्षण क्या है? 'ऋग्वेद', 'यजुर्वेद', 'सामवेद' का लक्षण लिखिए।

22. वेदस्य कालविषये मैक्समूलर-महाभागानां मतम् आलोचयत।

वेदों के समय के विषय में महाभाग मैक्समूलर के मत की आलोचना कीजिए।

23. वेदे देवतानाम् आकारचिन्तनं कथं विहितमिति प्रतिपादयत।

वेदों में देवताओं के आकार-चिंतन को किस प्रकार निर्धारित किया गया है, व्याख्या कीजिए।

24. चित्रं देवानामुदगादनीकम्...इति मन्त्रं सम्पूर्णं लिखित्वा तस्यार्थं लिखत।

चित्रं देवानामुदगादनीकम्...यह संपूर्ण मंत्र लिखिए और इसका अर्थ भी लिखिए।

25. नानाश्रान्ताय श्रीरस्तीति रोहित शुश्रुम।
पापो नृषद्वरो जन इन्द्र इच्चरतः सखा चरैवेति।

इति मन्त्रं सप्रसङ्गं व्याख्यात।

नानाश्रान्ताय श्रीरस्तीति रोहित शुश्रुम।
पापो नृषद्वरो जन इन्द्र इच्चरतः सखा चरैवेति।

इस मंत्र की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

26. ओ षु स्वसारः कारवे शृणोत ययौ वो दूरादनसा रथेन।
नि षू नमध्वं भवता सुपारा अधोअक्षाः सिन्धवः स्रोत्याभिः॥

मन्त्रस्यास्य प्रसङ्गमुल्लिख्य अर्थं विवृणुत।

ओ षु स्वसारः कारवे शृणोत ययौ वो दूरादनसा रथेन।
नि षू नमध्वं भवता सुपारा अधोअक्षाः सिन्धवः स्रोत्याभिः॥

इस मंत्र का प्रसंग लिखिए और इसका अर्थ समझाइए।

27. स उत्तमस्य इति सूत्रं व्याख्यात।

स उत्तमस्य—इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

28. पितरामातरा च छन्दसि इति सूत्रं व्याख्यात।

पितरामातरा च छन्दसि—इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

29. चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि इति सूत्रं व्याख्यात।
चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि—इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

30. देवासः इति रूपं साधयत।
देवासः—इस रूप को सिद्ध कीजिए।

[D] पञ्च दीर्घोत्तरैः समाधेयाः — 6×5=30
पाँच के दीर्घ उत्तर दीजिए :

31. भारतीयसंस्कृतौ वैदिकवाङ्मयस्य प्रभावम् आलोचयत।
भारतीय संस्कृति पर वैदिक साहित्य के प्रभाव की आलोचना कीजिए।

32. उषस्-सूक्तस्य सारं प्रतिपादयत।
उषस्-सूक्त का सार प्रतिपादित कीजिए।

33. 'शुनःशेपोपाख्यानपठनेन कीदृशी नीतिशिक्षा लभ्यते इति सविस्तरमालोचयत।
'शुनःशेप' कहानी को पढ़ने से कौन-से नैतिक पाठ सीखे जा सकते हैं, विस्तार सहित आलोचना कीजिए।

34. सुपां सुलुक्... इति सूत्रं सम्पूर्णं लिखित्वा सोदाहरणं व्याख्यात।
सुपां सुलुक्... यह सूत्र संपूर्ण रूप से लिखकर उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

35. तुमर्थे सेसेनसे...इति सूत्रं सम्पूर्णं लिखित्वा सोदाहरणं व्याख्यात।
तुमर्थे सेसेनसे...यह सूत्र संपूर्ण रूप से लिखकर उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

★ ★ ★